लघु पीछी जीवदया का उपकरण, भारी नहीं

• श्रमणाचार्य विमर्शसागर

श्री भगवती आराधना ग्रंथ में आचार्य भगवन् शिवार्य महाराज ने संयमोपकरण पीछी सहित जिनलिंग का महत्व दर्शाते हुये कहा है-

पडिलेहणेण पडिलेहिज्जइ चिण्हं च होइ सगपक्खे।
विस्सासियं च लिंगं संजदपडिरूवदा चेव।।96।।

अर्थात् पीछी के द्वारा प्रतिलेखना करनी चाहिए। अपनी प्रतिज्ञा में पीछी चिन्ह होती है और प्रतिलेखना रूप लिंग मनुष्यों को विश्वास करानेवाला है तथा प्राचीन मुनियों का प्रतिबिम्ब रूप है।

पुन: प्रतिलेखन कहाँ करना चाहिए ? इसके उत्तर में कहते हैं-

इरियादाणणिखेवे विवेगठाणे णिसीयणे सयणे।
उव्वत्तणपरिवत्तण पसारणाउंटणामरसे।।95।।

अर्थात् गमन में, ग्रहण में, रखने में, मलत्याग में, स्थान में बैठने में, शयन में, ऊपर को मुख करके शयन में, करवट लेने में, हाथ-पैर फैलाने में, संकोचने में, और स्पर्शन में पीछी से प्रतिलेखन (परिमार्जन) करना चाहिए।

पुन: प्रतिलेखना का लक्षण निरूपित करते हैं-

रयसेयाणमगहणं मद्दव सुकुमालदा लघुत्तं च।
जत्थेदे पंच गुणा तं पडिलिहणं पसंसंति।।97।।

अर्थात् रज और पसीने को ग्रहण न करती हो, कोमल स्पर्शवाली हो, सुकुमार हो, हल्की हो। जिसमें ये पाँच गुण होते हैं उस प्रतिलेखना की प्रशंसा करते हैं।

जिनसूत्र में अहिंसा को परमधर्म कहा है। धन्य हैं निर्ग्रंथ तपोधन जो पंचमहाव्रत का पालन करते हुये सतत् अहिंसा धर्म में स्वयं को स्थित करते हैं। सचमुच पीछी मुनिराजों का अंहिसोपकरण है। जिसका आगम के परिप्रेक्ष्य में पालन करना ही कर्तव्य है।

यदि पीछी हल्की, सुकुमार, कोमल स्पर्शवाली न हो तो क्या दोष होगा ? इसका समाधान करते हुये आचार्य भगवन् भगवती आराधना ग्रंथ में कहते हैं-

'अमृदुना, असुकुमारेण, गुरुणा च प्रतिलेखनेन जीवानामुपघात एव कृतो न दयेति भाव:।'

अर्थात् कठोर, असुकुमार और भारी प्रतिलेखना से जीवों का घात ही होता है, दया नहीं।

दीक्षोपरान्त कुछ कारण ऐसे बने, जिसे देखकर मन में विचार आया कि जिनागम में जो पीछी का हल्का होना गुण बताया गया है, वह धारण करना योग्य है।

मैंने देखा एक साधु महाराज विहार काल में अपनी पीछी लौकिक देवता हनुमान की गदा की तरह अपने काँधे पर रखकर चल रहे थे।

यह देख मन में विचार आया कि पाँच सौ पंख की पीछी भी जब भारभूत लग रही है तब 1000-1200 पंखों की पीछी कितनी भारी हो जाती होगी। यद्यपि वीतराग पथ के पथिक साधकों के लिए पीछी रूप संयम का उपकरण भारभूत नहीं भव उद्धारक है तो भी संहनन की हीनता एवं जिनागम की आज्ञा के चलते पीछी का हल्का होना ही श्रेयोमार्ग की निर्बाध साधना में श्रेष्ठ है।

अत: हमने संघ में लघु पिच्छी (200 पंख) का विचार रखा। संघस्थ साधुओं ने प्रसन्नता से स्वीकार किया और कहा-गुरुदेव! आपका चिन्तन जिनागम की परिपालना एवं अनर्थदण्ड से बचानेवाला है। आज संघ में सभी साधु लघु पिच्छी (200 पंख) को धारण कर रहे हैं। यद्यपि समाज में श्रावकों को बड़ा आश्चर्य होता है, सभी लोग चर्चा करते हैं, इतनी छोटी-छोटी पिच्छी, किन्तु जब समाधान पाते हैं तो सराहना किये बिना नहीं रहते। उन्हें भी पिच्छी के गुण-दोष का ज्ञान होता है।

यद्यपि लोग कहते हैं बड़े महाराज की तो बड़ी पीछी होना चाहिये, तो मैं यही कहूँगा-छोटी पीछी रखकर मैं छोटा साधु ही ठीक हूँ। जैनम् जयतु शासनम्।

'जयदु जिणागम पंथो।'
'जिनागम पंथ जयवंत हो।'